ISSN: 0973-0583

वर्तमान माध्यमिक स्तर के बच्चों में बढ़ती अनुशासनहीनता : एक विवेचनात्मक अध्ययन

राजीव कुमार

शोध-छात्र, शिक्षा विभाग, बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ० रूद्र नारायण चौधरी

एसोसिएट प्रोफेसर,शिक्षाशास्त्र विभाग, एल.एन.मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट,मुजफ्फरपुर

सार

अनुशासन ही किसी भी देश और किसी भी समाज के जीवन की सबसे मूल्यवान संपत्ति है। जिस प्रकार अनुशासन का महत्व प्रत्येक देश और समाज के जीवन में अत्यधिक है, उसी तरह यह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए भी बेहद आवश्यक है। समाज के विकास के लिए बच्चों को विद्यालय में तैयार किया जाता है, इसलिए विद्यालय में अनुशासन का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालय में बच्चों को शिक्षा दी जाती है, जिससे उनके जीवन को मजबूत और सुंदर बनाया जा सके। वर्तमान माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में एक नई और जटिल समस्या देशभर में छात्रों की अनुशासनहीनता है। इस स्थिति के लिए केवल छात्रों को दोषी ठहराना अत्यधिक अन्यायपूर्ण होगा। असल में, अनुशासनहीनता के पीछे कई शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक कारक जिम्मेदार हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कारण हैं। पाठ्यक्रम की अनुपयुक्ता, परीक्षा प्रणाली में खामियाँ, शिक्षा का उद्देश्यहीन होना, सहशिक्षा का बढ़ता प्रचलन, जातीय भेदभाव, आर्थिक संकट, सामाजिक मान्यताओं में बदलाव, शिक्षकों की छात्रों के प्रति उदासीनता, राजनीतिक दलों द्वारा छात्रों को भड़काना, कामोत्तेजक फिल्में और अश्लील संगीत। इन सभी कारणों के परिणामस्वरूप छात्रों में अनुशासनहीनता की वृद्धि इतनी तेजी से हो रही है कि यह न केवल छात्र वर्ग के लिए, बल्कि समाज के लिए भी एक गंभीर चर्चा का विषय बन गया है। यह स्थिति समाज के माथे पर एक कलंक की छाया डाल रही है, जो प्रतिदिन और गहरी होती जा रही है। यदि इस समस्या का तत्काल समाधान नही किया गया, तो यह एक असाध्य रोग के रूप में विकसित हो सकता है, जो हमारे देश के लिए गंभीर दु:ख और संकट का कारण बन सकता है।

मुख्य शब्दः अनुशासनहीनता, माध्यमिक स्तर, छात्र, पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली, समाज, असाध्य रोग।

Received : 15/6/2025 **Acceptance : 15/7/2025**

परिचय:

अनुशासन एक ऐसा शब्द है जो दो भागों से मिलकर बना है- अनु और शासन। इसी से अनुशासन का निर्माण होता है। अनुशासन के किसी नियम के अनुसार चलना या नियमों के अधीन रहना। हमारे जीवन के हर कार्य के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है, लेकिन पारिवारिक और सामाजिक जीवन में इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। यदि हम अनुशासन का पालन नही करते हैं, तो हमारा जीवन असंतुलित हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप जीवन की गुणवत्ता में कमी आ सकती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनुशासन का होना अत्यंत आवश्यक है। जिन व्यक्तियों में अनुशासन की कमी होती है, उन्हें अनुशासनहीन माना जाता है। सफल जीवन जीने के लिए अनुशासन का महत्व अत्यधिक है। जब हम किसी कार्य को सही समय पर और उचित तरीके से करते हैं, तो यह हमारे अनुशासन को दर्शाता है। बच्चों में अनुशासन का विकास बचपन से ही होना चाहिए, क्योंकि विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की विशेष भूमिका होती है। जीवन का मूल मंत्र अनुशासन का महत्व है।

माध्यमिक स्तर के विद्यालय के संदर्भ में अनुशासन का अर्थ है कि छात्रों को अपने कार्यों और व्यवहार पर नियंत्रण रखना चाहिए। इसका तात्पर्य है कि वे विद्यालय

के निर्धारित नियमों का पालन करें और अपने आचरण में नैतिकता तथा शिष्टाचार को बनाए रखें। अनुशासन केवल नियमों का पालन करना नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा गुण है जो छात्रें को सही और गलत के बीच अंतर समझने में मदद करता है। अनुशासन का पालन करने से न केवल व्यक्तिगत विकास होता है, बल्कि यह विद्यालय के वातावरण को भी सकारात्मक बनाता है। इसीलिए उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यालय के नियमों का पालन करें और उचित व्यवहार अपनाएँ। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो विद्यालय का वह उद्देश्य विफल हो जाता है, जिसके लिए समाज ने विद्यालय की स्थापना की थी। इसी कारण अनुशासन की आवश्यकता महसूस होती है और विद्यालय में इसका महत्वपूर्ण स्थान होता है।

अनुशासन का पालन करके ही एक अच्छा विद्यार्थी बनना संभव है। अच्छे विद्यार्थियों को हमेशा माता-पिता, शिक्षकों और बड़ों की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। जीवन को आनंदपूर्वक जीने के लिए विद्या और अनुशासन दोनों की आवश्यकता होती है। विद्या का अंतिम उद्देश्य इस जीवन को मधुर और सुविधाजनक बनाना है। अनुशासन एक प्रकार की विद्या है, जिसमें अपनी दिनचर्या, थाल चाल, रहन-सहन, सोच-विचार और सभी व्यवहार को व्यवस्थित करना शामिल है। विद्यार्थियों के लिए अनुशासित रहना अत्यंत आवश्यक है। अनुशासन का गुण बचपन में ही ग्रहण किया जाना चाहिए। विद्यालय की सभी व्यवस्थाओं में अनुशासन और नियमों को लागू करने के पीछे यही तर्क है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासन के महत्व एवं विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की समस्याओं व समाधान पर प्रकाश डालना।

उपकल्पना :

1. स्कूल एवं समाज की बदलती परिस्थितियों के कारण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता बढ़ रही है।

माध्यमिक स्तर के शिक्षा में अनुशासन का महत्व :

अनुशासन शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा के किसी भी क्षेत्र या समाज में अनुशासन का महत्व अत्यधिक है। विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन, सामाजिक जीवन और हर स्थान पर हमें अनुशासन के नियमों का पालन करना चाहिए। यही कारण है कि हमारा जीवन सुखद बनता है और हम अपने व्यक्तित्व को निखारकर सभी के सामने प्रस्तुत कर पाते हैं। यदि हम शिक्षा में अनुशासन का पालन करते हैं, तो हमें शिक्षा के साथ-साथ आत्मविश्वास भी प्राप्त होता है। जब हम अध्ययन करते समय अनुशासन का पालन करते हैं, तो हम अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में अनुशासन का पालन करने पर हम शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए प्रत्येक अध्याय को अच्छी तरह समझ सकते हैं।

अनुशासन के प्रकार :

अनुशासन के विभिन्न लोगों द्वारा विभिन्न प्रकार बताए गए हैं। नीचे इसके प्रकार दिए गए हैं-

1. सकारात्मक अनुशासन : सकारात्मक अनुशासन व्यवहार के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति में सकारात्मक सोच को विकसित करता है, यह दर्शाते हुए कि कोई व्यक्ति intrinsically अच्छा या बुरा नही होता, बल्कि उसके कार्य अच्छे या बुरे होते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को समस्या सुलझाने के कौशल सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इस प्रक्रिया में उनके साथ मिलकर काम करते हैं। इसके अलावा, माता-पिता अपने बच्चों को अनुशासन सिखाने के लिए शैक्षणिक संस्थानों में भेजते हैं, जहाँ उन्हें सही मार्गदर्शन मिलता है। ये सभी तत्व सकारात्मक अनुशासन को प्रोत्साहित करते हैं और इसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

2. नकारात्मक अनुशासन : नकारात्मक अनुशासन एक ऐसा अनुशासन है जिसमें मुख्य रूप से यह ध्यान केंद्रित किया जाता है कि व्यक्ति द्वारा कौन-से गलत कार्य किए जा रहे हैं, जो उसके लिए हानिकारक साबित हो सकते हैं। इस प्रकार के अनुशासन में व्यक्ति को निर्देशित किया जाता है और उन्हें नियमों तथा कानूनों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि व्यक्ति अपने कार्यों के परिणामों को समझे और अपने व्यवहार में सुधार लाए।

नकारात्मक अनुशासन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह व्यक्ति को उनके गलतियों के प्रति जागरूक करता है और उन्हें सही दिशा में ले जाने का प्रयास करता है।

3. सीमा आधारित अनुशासन : सीमा आधारित अनुशासन का उद्देश्य सीमाओं को निर्धारित करना और नियमों को स्पष्ट करना है। इस अनुशासन का एक सरल सिद्धांत है, कि जब एक बच्चे को यह ज्ञात होता है कि यदि वे निर्धारित सीमा से बाहर जाते हैं, तो इसके परिणाम क्या होंगे, तो ऐसे बच्चे अधिक आज्ञाकारी बनते हैं। उनका व्यवहार सकारात्मक रहता है और वे हमेशा खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं।

4. व्यवहार आधारित अनुशासन :- व्यवहार में परिवर्तन लाने से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं। जब कोई व्यक्ति अच्छा व्यवहार करता है, तो उसे प्रशंसा या पुरस्कार प्राप्त होता है, जो उसके लिए प्रोत्साहन का काम करता है। इसके विपरीत, दुर्व्यवहार करने पर नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं, जो न केवल उस व्यक्ति के लिए बल्कि उसके आस-पास के लोगों के लिए भी हानिकारक हो सकते हैं। इस प्रकार, व्यवहार में बदलाव का प्रभाव व्यापक होता है और यह समाज में विभिन्न स्तरों पर महसूस किया जा सकता है।

5. आत्म अनुशासन: आत्म अनुशासन अपने मन और आत्मा को नियंत्रित करना, जो अंततः हमारे शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। इसके लिए, हमें अपने आप को अनुशासित रहने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। जब हमारा मस्तिष्क अनुशासित होता है, तो हमारा शरीर स्वाभाविक रूप से बेहतर तरीके से कार्य करता है।

माध्यमिक विद्यार्थियों में अनुशासनीनता के कारण एवं निवारण :

अनुशासनहीनता की समस्या केवल भारत में ही नही, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के विद्यालयों में फैली हुई है। हम इसे प्रतिदिन समाचार पत्रों में देखते हैं। छात्र छोटी-छोटी समस्याओं के कारण कक्षाओं का बहिष्कार कर देते हैं, प्रधानाध्यापक का घेराव करते हैं, हड़ताल करके विद्यालयों में ताले लगा देते हैं, तोड़फोड़ और उपद्रव करके विद्यालय एवं सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाते हैं। इस प्रकार, आज यह समस्या चिंता का विषय बन गई है। प्रत्येक देश में अपनी परिस्थितियों के अनुसार अनुशासनहीनता के विभिन्न कारण जिम्मेदार हो सकते हैं। मेरी दृष्टि में, भारत के विद्यालयों में छात्र अनुशासनहीनता को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हो सकते हैं तथा इन कारणों के निवारण निम्न रूप से हो सकता है।

1. परीक्षा में धोखा देना या नकल करना : परीक्षा में धोखा देना या नकल करना एक गंभीर समस्या है। इसे रोकने का सबसे प्रभावी उपाय यह है कि शिक्षक परीक्षा के दौरान हमेशा चौकस रहें, ताकि छात्रों को अनुचित तरीके से काम करने का अवसर न मिले। इसके अलावा, छात्रों को परीक्षा से पहले ही स्पष्ट चेतावनी दी जानी चाहिए कि नकल करना अनुचित है। यदि इसके बावजूद भी कोई छात्र नकल करता है, तो उसे उचित दंड दिया जाना चाहिए, ताकि यह संदेश स्पष्ट हो सके कि ऐसे व्यवहार को सहन नही किया जाएगा।

2. कक्षा में अध्यापक के पढ़ाते-समय छात्रों का आपस में बातचीत करना: कक्षा में जब शिक्षक पढ़ा रहे होते हैं, तब छात्रों के बीच बातचीत होना एक समस्या है, जिसके कारणों की पहचान करना आवश्यक है। यह संभव है कि शिक्षक की पढ़ाने की विधि में कुछ कमी हो, जिससे छात्रों का ध्यान भटक रहा हो। इस स्थिति को सुधारने के लिए, शिक्षकों को छात्रों से पाठ से संबंधित प्रश्न पूछने चाहिए, ताकि उनकी भागीदारी बढ़े और वे अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें।

3. शिक्षालय में हमेशा देर से आना : शिक्षालय में हमेशा देर से आने की घटनाओं के संदर्भ में यह आवश्यक है कि छात्रों के अभिभावकों से संवाद स्थापित किया जाए। इस चर्चा के दौरान हमें यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि छात्रों के देर से आने के पीछे क्या कारण हैं। जब हम इन कारणों को समझ लेते हैं, तब हमें उचित उपाय करने चाहिए ताकि इस समस्या का समाधान किया जा सके।

4. झूठ बोलना - कई बार छात्र केवल डर के कारण झूठ बोलते हैं। यह डर कई कारणों से उत्पन्न हो

सकता है, जैसे कि परीक्षा में खराब प्रदर्शन का डर, माता-पिता की अपेक्षाओं का दबाव, या शिक्षकों की सख्ती। ऐसे में छात्रों के साथ प्रेमपूर्वक और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए। जब वे झूठ बोलते हैं, तो उन्हें उचित कारण बताने पर माफ कर दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही, उन्हें यह भी अच्छे से समझाया जाना चाहिए कि झूठ बोलने के कई दोष हैं, जैसे कि विश्वास की कमी, रिश्तों में दरार, और आत्म-सम्मान में कमी। इसके अलावा, उन्हें चेतावनी भी दी जानी चाहिए कि भविष्य में ऐसा करने से क्या परिणाम हो सकते हैं, ताकि वे अपनी गलतियों से सीख सकें और सही मार्ग पर चल सकें।

5. छोटी वस्तुएँ चुराना : छोटी वस्तुओं की चोरी के पीछे के कारणों की पहचान की जानी चाहिए, जैसे कि सुरक्षा की कमी, निगरानी का अभाव, या कर्मचारियों की लापरवाही। इसके बाद, इन समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए, जैसे कि सुरक्षा उपायों को मजबूत करना, सीसीटीवी कैमरे लगाना, और कर्मचारियों को चोरी की रोकथाम के लिए प्रशिक्षित करना।

6. गृह-कार्य न लाना : यह संभव है कि छात्र को कार्य समझ में न आया हो या घर पर कार्य करने की सुविधा उपलब्ध न हो। कभी-कभी छात्र को दिए गए कार्य की जटिलता या उसकी प्रकृति के कारण वह उसे सही तरीके से नहीं कर पाता। इसके अलावा कुछ छात्रों के पास घर पर अध्ययन करने के लिए आवश्यक संसाधन या शांत वातावरण नहीं होता, जिससे वे कार्य को पूरा नहीं कर पाते। इसके परिणामस्वरूप छात्र का कार्य अधूरा रह सकता है और यह स्थिति विशेष अध्यापक के प्रति नकारात्मक भावनाओं को भी जन्म दे सकती है। इसलिए, इन कारणों को सही तरीके से समझने के बाद, शिक्षकों को उचित उपाय करने चाहिए, जैसे कि छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करना या कार्य को सरल बनाना।

7. स्कूल की सामग्रियों को गंदा करना या तोड़ना: स्कूल की सामग्रियों को गंदा करना या तोड़ना एक गंभीर मुद्दा है और इसके लिए छात्रों से हर्जाना वसूलने का प्रावधान होना चाहिए। यदि कोई छात्र जानता है कि कैसे मरम्मत करनी है, तो उसे अपनी जिम्मेदारी समझते हुए सामग्रियों की मरम्मत करने के लिए कहा जाना चाहिए। इस तरह से हम न केवल स्कूल की संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं, बल्कि छात्रों को भी अपनी गलतियों का एहसास करवा सकते हैं।

8. आवारा फिरना - स्कूल से भागने के कई कारण हो सकते हैं। कभी-कभी, बच्चे को कोई अन्य छात्र परेशान कर रहा होता है, जिससे वह स्कूल में असहज महसूस करता है। इसके अलावा, कुछ बच्चों को पढ़ाई में रुचि नही होती, जिससे वे स्कूल से भागने का निर्णय लेते हैं। इसके अलावा, कुछ बच्चों को व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता होती है, जो उन्हें स्कूल में नहीं मिल पाता। इसलिए यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी भागकर कहाँ जाता है और उसके पीछे की वजहें क्या हैं।

9. छोटे बच्चों को परेशान करना: जब वे माफी मांगें, तो उन्हें माफ कर देना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि हम उन्हें एक दूसरा मौका दें और उनके प्रति दया दिखाएं। इसके साथ ही, उन्हें एक चेतावनी भी दी जानी चाहिए ताकि वे भविष्य में ऐसा करने से बचें। यह चेतावनी उन्हें यह समझाने में मदद करेगी कि उनके कार्यों के परिणाम होते हैं और उन्हें अपने व्यवहार में सुधार करने की आवश्यकता है।

10. अध्यापक को प्रति धृष्टता का व्यवहार: अध्यापक को हमेशा प्रयास करना चाहिए कि वे छात्रों के प्रति सहानुभूति और समझदारी से पेश आए। उन्हें छात्रों की समस्याओं और भावनाओं को समझने की कोशिश करनी चाहिए और किसी भी प्रकार की मानहानि या अपमान का मुद्दा उठाने से बचना चाहिए। यदि छात्र फिर भी अपने व्यवहार में सुधार नहीं करता है, तो अध्यापक को इस स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रधानाचार्य को इसकी रिपोर्ट करनी चाहिए ताकि उचित कार्रवाई की जा सके।

आज सम्पूर्ण समाज अनुशासनहीनता की समस्या से प्रभावित है। केवल छात्रों को दोष देना हमारी गलती है। छात्रों में जो अनुशासनहीनता है, वह वास्तव में सम्पूर्ण समाज में फैली अनुशासनहीनता का एक लघु रूप है, जो हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जबकि समाज के अन्य हिस्सों में यह समस्या अंगारों की तरह है, जो भीतर ही भीतर जलती रहती है। अनुशासनहीनता की झलक आप सरकारी या गैर सरकारी कर्मचारियों में देख सकते हैं,

जिन्होंने एक अजीब मनोवृत्ति विकसित कर ली है। इस मनोवृत्ति को हम घड़ी और कैलेंडर की मनोवृत्ति कह सकते हैं। वे पूरे दिन घड़ी की सुई को देखते रहते हैं कि कब पाँच बजे, कब छुट्टी होगी, कब वे घर पहुँचेंगे और कब कैलेंडर में पहली तारीख आएगी, और कब उन्हें पैसे मिलेंगे। बाकी काम करने की कोई इच्छा नहीं होती, यह अनुशासनहीनता का एक स्पष्ट उदाहरण है। आप प्रतिदिन समाचार पत्रों और टेलीविजन पर राजनीतिक नेताओं में बढ़ती अनुशासनहीनता के बारे में पढ़ते और देखते हैं। विधानसभा और लोकसभा में अक्सर गाली-गलौज, जूते-चप्पल, लात-घूसे, कुर्सी-टेबल का इस्तेमाल, और हो-हल्ला होता है। क्या यह अनुशासनहीनता नहीं है?

निष्कर्ष :

आज की जनता की सोच इस तरह बदल गई है कि जैसे स्वतंत्र देश में हर व्यक्ति को नैतिक और अनैतिक कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता मिल गई हो। इन सभी घटनाओं को ध्यान में रखते हुए, हम यह कह सकते हैं कि न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया का समाज अनुशासनहीनता की समस्या से जूझ रहा है। केवल छात्रों में पाई जाने वाली अनुशासनहीनता को ही इसके लिए जिम्मेदार ठहराना उचित नहीं है। छात्रों में फैली अनुशासनहीनता समाज में फैली अनुशासनहीनता का ही एक लघुरूप है। अतः मेरा मानना है कि यदि हमें इस समस्या को जड़ से खत्म करना है तो दोष के सम्पूर्ण नागरिक शिक्षण संस्थाएँ, कर्मचारीगण, राजनेता, अभिभावकगण एवं छात्र-छात्राएँ सभी अपनी अपनी जिम्मेदारियों को समझे और पूर्ण ईमानदारी से अपना-अपना काम करे तो कुछ दिनों में यह समस्या स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. मुकेश कुमार मीना 2017) वर्तमान विद्यालयों में बढ़ती अनुशासनहीनता एक चिन्ता का विषय, नेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड इनोवेटिव प्रैक्टिस, वॉल्यूम-2, इश्यू-2
2. अग्निहोत्री, रविन्द्र (1994) आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ एवं समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. पाण्डेय, रामसकल : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन।
4. सिंह, कर्ण : एजुकेशन डेवलपमेन्ट ऑफ एजुकेशनल सिस्टम इन इण्डिया।
5. https://www.jansatta.com/duniya-mere-aage/education-of-discipline/70513/
6. Barnes, M. J., Slate, J. R., Martinez-Garcia, C., & Moore, G. W. (2017). Differences in discipline consequence assignment by student ethnicity/race: A Multiyear, Texas Analysis. Journal of Educational System, 1(1), 15–28.
7. Blegur, J., Wasak, M. R. P., Tlonaen, Z. A., & Manggoa, M.A. (2017). Students' behaviour of indiscipline syndrome in teaching and learning process. Educational Administration Review, 1(2), 37–41.
8. Freire, I., & Amado, J. (2009). Managing and handling indiscipline in schools. International Journal of Violence and School, 8(1), 85–97.